THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

समाधान के साथ शुरू करो
Start with the solution

Christian Science Sentinel Author – Malcolm Jackson

volume 115, issue 08, February 25, 2013

शुरू में इंग्लैंड से प्रवास करने के बाद, आस्ट्रेलिया के जिस हिस्से में मैं रहा, सड़क के चिन्हों का क्रम उलटा था। ''आगे लेन है बस की'' और ''गली एकतरफा'' मेरे मस्तिष्क में घूम रहे थे। चाहे उन्हें उलटा कर के आप को मिलता है ''बस की लेन आगे है'' और ''एकतरफा गली''।

मेरी दुविधा असल में शिक्षा का परिणाम थी। अपनी अधिकतर जिन्दगी इंग्लैंड में गुज़ारने के कारण थी, मुझे सड़क के चिन्ह उस तरह पढ़ने की आदत थी, जिस तरह आप एक पुस्तक पढ़ते हो। आप सब से ऊपर की पंक्ति से शुरू करते हो और नीचे जाते हो। आस्ट्रेलिया के उस हिस्से में क्रम उलटा होता है–चिन्ह का पहला शब्द या पक्ति इस तरह शुरू होती है जैसे कि नीचे हो और पंक्ति में अगला शब्द ऊपर और इसी तरह।

मुझे सामान्य तौर पर मान्य पूर्वधारणा को भूलना पड़ा
कि भौतिक पदार्थ मूल तथा कारण दोनों होता है।

दृष्टिकोण में ऐसा ही एक बदलाव मुझे लाना पड़ा जैसे मैंने क्रिश्चियन साँयस का अध्ययन शुरू किया। जिस तरह मुझे अपने आप को सड़क के चिन्हों के बारे में पुनः शिक्षित करना पड़ा था, मुझे सामान्य तौर पर मान्य पूर्वधारणा को भूलना पड़ा कि भौतिक पदार्थ मूल तथा कारण दोनों होता है।

यह ''एक पूर्ववर्ती'' (कारण से प्रभाव तक) तर्क सुझाव देता है कि भौतिक शरीर, एक नियम के अनुसार, फैसला करता है, हमारी स्वीकृति के साथ या उसके बिना, स्वस्थ होने का या बीमार होने का। सबसे सरल शब्दों में मैडिकल चिकित्सक, रोग कहलाए जाने वाले भौतिक प्रभाव को देखता है और फिर शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के ज्ञान द्वारा, वापिस शारीरिक कारण तक खोज करता है।

''एक पूर्ववर्ती'' तर्क का क्रिश्चियन साँयस के दृष्टिकोण से, मेरी बेकर एडी के इस कथन के द्वारा संक्षिप्त विवरण दिया जा सकता है, जो कि साँयस एंड हैल्थ विद् दि स्क्रिपचर्स में है, ''वैज्ञानिक अस्तित्व तथा दिव्य उपचार की ख्रीस्तीय समझ सम्पूर्ण सिंद्धात तथा विचार को सम्मिलित करती है,–सम्पूर्ण परमेश्वर तथा सम्पूर्ण मानव,–सोच तथा प्रत्यक्षीकरण के आधार की तरह'' (पृष्ठ259)।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

क्रिश्चियन साँयस उपचार के अभ्यास की सुंदरता, शक्ति तथा तर्क संगति है कि यह सदा समाधान से शुरू करता है, चाहे हम किसी भी समस्या से जूझ रहे हों। यह समाधान सदा आध्यात्मिक, दिव्य वास्तविकता होता है और सदा उस के एकदम विपरीत या उलट होता है जो कुछ भी भौतिक इन्द्रियाँ, वास्तविक की तरह प्रस्तुत कर रही हों। जब बीमारी या कोई और अवस्था प्रकट होती है, क्रिश्चियन साँयस उपचारक का आरम्भिक मुद्धा **परमेश्वर**, **आत्मा** की परम सर्वस्वता तथा अच्छाई तथा मानव को सम्मिलित करते हुए **उसकी** सम्पूर्ण शानदार रचना होता है।

आइए मैं उदाहरण के साथ बताता हूँ। हमारे घर में अकसर आने वाली एक आंगतुक ने एक बार टिप्पणी की कि गीली घास पर चलने के बाद उसे हमेशा जुकाम हो जाता था। मैंने उस समय इसके बारे में कुछ नहीं सोचा। कुछ दिनों बाद मैं सुबह बहुत जल्दी गले में काफी खराश तथा दर्द के साथ उठ गया। जागने पर मुझे पहला विचार आया कि पिछले दिन मैं गीली घास पर चला था और मेरे पैर गीले हो गए थे।

मुझे एकदम पता चल गया कि यह सोचने का सही तरीका नहीं था और ''एक पूर्ववर्ती'' तर्क का विचार मन में आया। आध्यात्मिक, दिव्य तथ्य था कि परमेश्वर ने मानव को समस्त धरती पर प्रभुता प्रदान की थी। (देखें उत्पत्ति 1:26) मैंने तर्क किया कि यह उपस्थित, आध्यात्मिक तथा दिव्य वास्तविकता होते हुए, मैं गीली घास पर चलने के कारण कष्ट नहीं पा सकता था, अपितु **परमेश्वर** की सुन्दर रचना होने के नाते केवल समन्वय तथा प्रसन्नता अनुभव कर सकता था। मैं फिर से सो गया और जब मैं उठा, रोगलक्षण पूरी तरह चले गए थे।

परमेश्वर ने अपनी रचना, मानव तथा ब्रह्माण्ड को बहुत अच्छा घोषित किया था क्रिश्चियन साँयस में, ''एक पूर्ववर्ती'' तर्क का आरम्भ सम्पूर्ण दिव्य **सिद्धांत**, **परमेश्वर** को एकमात्र **कारण** मानते हुए होता है, इस तरह एक सम्पूर्ण प्रभाव में प्रतिफलित होता हुआ। उपचार, इंसानी चेतना में इस आध्यात्मिक तथ्य का एक बोध होता है।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.